german cooperation
DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT

Co-funded by the European Union

Ministry of Environment, Forest and Climate Change

कृषि विभाग राजस्थान DOA

भारत में जलवायु और जैव-विविधता लक्ष्यों के लिए राजस्थान में कृषि-पारिस्थितिक बदलाव का समर्थन

संदर्भ

भारत अपनी 1.4 अरब की आबादी और 159.7 मिलियन हेक्टेयर खेती योग्य भूमि (जो दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी है) के साथ, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के नुकसान और खाद्य सुरक्षा जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने में अहम योगदान देने की क्षमता रखता है। भारत का लक्ष्य 2030 तक 7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है (आर्थिक मामलों का विभाग, भारत सरकार, 2024); ऐसे में भारत को आर्थिक विकास और सतत विकास के लक्ष्यों (SDGs), कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ग्लोबल बायोडायवर्सिटी फ्रेमवर्क (GBF) और पेरिस समझौते के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं के बीच संतुलन बनाना होगा।

भारत का कृषि क्षेत्र न केवल वैश्विक खाद्य उत्पादन के लिए ज़रूरी है, बल्कि खुद देश के लिए भी अहम है, क्योंकि यह 50% से ज़्यादा आबादी की आजीविका का सबसे बड़ा ज़रिया है। राजस्थान में, जहाँ 70% से ज़्यादा आबादी खेती पर निर्भर है, यह क्षेत्र पानी की कमी, भूमि की गुणवत्ता में गिरावट, मिट्टी का कटाव, बढ़ता तापमान और अनियमित बारिश जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है; और जलवायु परिवर्तन इन समस्याओं को और अधिक बढ़ा रहा है। हालाँकि भारत सरकार ने खेती में टिकाऊ तौर-तरीके अपनाने के लिए नीतियाँ बदली हैं, लेकिन टिकाऊ कृषि-खाद्य प्रणाली की दिशा में बड़े पैमाने पर बदलाव अभी भी हासिल करना बाकी है।

परियोजना का नाम	भारत में जलवायु और जैव-विविधता लक्ष्यों के लिए राजस्थान में कृषि-पारिस्थितिक बदलाव का समर्थन।
भागीदार देश	भारत (राजस्थान)
वाल्यूम	3 Mio. EUR (2.5 Mio. EUR of EU; 0.5 Mio. EUR BMZ)
अवधि	जनवरी 2026 से नवम्बर 2028
कार्यान्वयन भागीदार	कृषि विभाग, राजस्थान सरकार और Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
लक्षित समूह	राजस्थान में खेती और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर ग्रामीण समुदाय, जिसमें महिला किसानों, सेल्फ-हेल्प ग्रुप (SHG) और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

Implemented by

giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

खेती के ऐसे तरीके जो टिकाऊ नहीं हैं, जैवविविधता के नुकसान की मुख्य कारणों में से एक हैं। खाद्य सामग्री की बढ़ती मांग, खेती के तरीकों और जलवायु परिवर्तन की वजह से प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक सेवाओं पर बढ़ता दबाव, सतत विकास के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

कृषि-पारिश्थितिकी पर आधारित सतत और जलवायु-लचीली खाद्य प्रणाली को अपनाने के लिए — फ़सलों, देसी बीजों, पेड़ों और पशुओं को एकीकृत करते हुए रसायनिक इनपुट कम करने वाली एक समेकित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें समर्थन करने वाली नीतियां, टेक्नोलॉजी, फ़ाइनेंस, नॉलेज, मार्केट और मज़बूत सामुदायिक प्रतिबद्धता शामिल हो, जिसमें महिला किसानों को मज़बूत बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाए।

कृषिवानिकी प्रणाली के तहत पेड़ों और फसलों का प्रबंधन करता किसान | © *GIZ India* / आशिमा नेगी

उद्देश्य

इस परियोजना का उद्देश्य पेरिस एग्रीमेंट के तहत भारत को राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) पाने में सहायता करना है और मिशन LiFE के सिद्धांतों के अनुसार हरित, निम्न-कार्बन और जलवायु-लचीलेपन को अपनाने की प्रक्रिया को आसान बनाना है। राज्य स्तर पर, यह राजस्थान में कृषि-खाद्य प्रणाली के कृषि-पारिस्थितिकीय परिवर्तन में मदद करना चाहता है, जिससे वैश्विक सतत खाद्य प्रणाली के लक्ष्यों में मदद मिलेगी।

दृष्टिकोण

यह परियोजना एक समेकित तरीका अपनाता है जिसमें एक सतत और जलवायु-लचीली कृषि-खाद्य प्रणाली को बढ़ावा देने हेतु संस्तागत मज़बूती, सामुदायिक कार्रवाई और विपणन विकास को मिला दिया जाता है।

इसे 'स्ट्रेंथनिंग जेंडर-रिस्पॉन्सिव फ़ॉरेस्ट इकोसिस्टम्स मैनेजमेंट एंड एग्रोफ़ॉरेस्टी' (G-VAN) परियोजना के हिस्से के तौर पर अंतःस्थापित एवं लागू किया जा रहा है, जिसे जर्मनी के 'फ़ेडरल मिनिस्ट्री फ़ॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट' (BMZ) का सहयोग मिला है। यह हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में कृषिवानिकी और सतत परिदृश्य प्रबंधन से जुड़ी पहलों के अनुभव, साझेदारी और सीख पर आधारित है और सफल तरीकों को राजस्थान की परिस्थितियों के अनुसार अपनाता है।

यह परियोजना दो-स्तरीय गवर्नेंस स्ट्रक्चर (राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय स्टीयरिंग कमेटियां) का पालन करता है और इसे राजस्थान के बाड़मेर और नागौर ज़िलों में लागू किया जाएगा।

अपेक्षित परिणाम

- कृषि पारिस्थितिकी और कृषिवानिकी के लिए संस्थागत क्षमताओं को मजबूत करना।
- कृषि और प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर समुदायों का प्रशिक्षण और पायलट प्रदर्शनों के माध्यम से जलवायु लचीली कृषि पारिस्थितिकीय प्रथाओं को अपनाने में समर्थन करना।
- प्रमाणीकरण, मूल्य संवर्धन और बाजार तक बेहतर पहुंच के माध्यम से एफपीओ और महिला स्वयं सेवी संगठनों के लिए आर्थिक अवसरों को बढ़ाना।

टिकाऊ खेती पर किसानों और समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ ज्ञान के आदान-प्रदान का सत्र | © *GIZ India*

द्वारा प्रकाशित Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

पंजीकृत कार्यालय बॉन और एशबोर्न, जर्मनी

परियोजना भारत में जलवायु और जैव-विविधता लक्ष्यों के लिए राजस्थान में कृषि-पारिस्थितिकीय बदलाव का समर्थन करना,
इंडो-जर्मन बायोडायवर्सिटी प्रोग्राम
A-2/18, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-110029
T: +91 11 4949 5353
E: biodiv.india@giz.de
W: www.giz.de/india

संपर्क संजय तोमर, परियोजना प्रबंधक, GVAN परियोजना
ई- sanjay.tomar@giz.de

फोटो क्रेडिट पृष्ठ 1: GIZ India / यशस्विनी चौधरी
पृष्ठ 2: GIZ India / आशिमा नेगी

इस प्रोग्राम को यूरोपियन यूनियन और जर्मन फेडरल मिनिस्ट्री फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट (BMZ) मिलकर फंड करते हैं।

इस पब्लिकेशन के कंटेंट के लिए GIZ ज़िम्मेदार है।

दि. जून, 2026